विश्व न्याय मन्दिर

18 जनवरी, 2019

विश्व के बहाईयों को

प्रिय मित्रों,

बहाउल्लाह ने नरेशों तथा शासकों का जब आह्वान किया था कि वे आपस में मेल-मिलाप स्थापित करें और उनको धरती पर शान्ति की स्थापना का दायित्व दिया था, उसके पचास वर्ष बाद ही उस कालखण्ड की बड़ी शक्तियाँ युद्ध में उलझ गईं। वह पहला संघर्ष था जिसे "विश्व युद्ध" माना गया, और इसे भयंकर प्रचण्डता के अग्निकाण्ड के रूप में याद किया जाता है; इस युद्ध के अभूतपूर्व पैमाने तथा भीषण रक्तपात ने हर परवर्ती पीढ़ी की चेतना पर अपनी छाप छोड़ी है। फिर भी, इस बर्बादी और वेदना में से, विश्व में स्थिरता लाने के लिए एक नई व्यवस्था की सम्भावनाएँ विकसित हुईं-विशेष रूप से पेरिस शान्ति सम्मेलन के समय-जो एक सौ बरस पहले आज के दिन प्रकटित हुई थीं। बाद के बरसों में, अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकलापों के सम्मुख आ खड़ी हुईं बारम्बार संकटापन्न स्थितियों के बावजूद, शोगी एफेन्दी ने "युगचेतना से सामन्जस्य मिला कर कार्यरत बलों" की, भले ही उनकी प्रगति कितनी ही अनियमित रही हो" पहचान की। इन ताकतों ने मानवता को एक शान्तिपूर्ण युग की ओर बढ़ना जारी रखना है, यह महज ऐसी शान्ति नहीं, जो सशस्त्र संघर्ष का वर्जन करती है, बल्कि यह मानव अस्तित्व की वह सामूहिक संस्थिति है जो एकता को मूर्त स्वरूप प्रदान करती है। बावजूद इसके, अभी एक लम्बी यात्रा तय करनी है जो रुक-रुक कर आगे बढ़ रही है। इस समय हमारे लिए यह हितकर है कि हम इस यात्रा में हुई प्रगति पर, शान्ति की समसामयिक चुनौतियों पर, और इसकी सम्प्राप्ति हेतु जिस योगदान के लिए बहाईयों का आह्वान किया गया है, उस पर चिन्तन-मनन करें।

विगत एक सौ बरसों में कम से कम तीन ऐतिहासिक क्षण ऐसे रहे हैं जब यह प्रतीत हुआ कि मानवजाति वास्तविक तथा स्थायी शान्ति तक पहुँच रही है, यद्यपि हर बार अपनी कमजोरियों पर काबू न पाने के कारण वह पीछे रह गई। पहला अवसर था पेरिस सम्मेलन के फलस्वरूप राष्ट्र संघ की स्थापना-उसके संस्थापकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति सुनिश्चित करने के लिए अभिप्रेत संगठन। यह वह साधन था जिसके जरिए इतिहास में पहली बार बहाउल्लाह द्वारा विश्व के शासकों पर लागू किये गये सामूहिक सुरक्षा तंत्र पर "गंभीरतापूर्वक विचार, चर्चा और परीक्षण" किया गया। लेकिन शान्ति समझौता, जो युद्ध

समाप्ति पर स्थापित किया गया था, वह सांघातिक रूप से दोषपूर्ण हो गया, और राष्ट्र संघ द्वितीय विश्व युद्ध को रोक नहीं पाया, इतिहासकारों ने इसे मानव इतिहास का सर्वाधिक सांघातिक संघर्ष माना। ठीक जिस तरह एक भयावह संघर्ष की अवधि के बाद विश्व शान्ति की ओर पहला महत्वपूर्ण कदम उठा था, वैसा ही दूसरे विश्व युद्ध के बाद हुआ। राष्ट्र संघ की राख से संयुक्त राष्ट्र संघ का ही निर्माण नहीं हुआ, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाएँ भी अस्तित्व में आईं, और मानवाधिकारों तथा अन्तर्राष्ट्रीय विधान के क्षेत्र में ऐतिहासिक प्रगति हुई। उत्तरोत्तर तेजी से, उपनिवेशीय शासन के अंतर्गत के अनेक राज्य क्षेत्र स्वतंत्र राष्ट्र बने, तथा क्षेत्रीय सहयोग के आयोजनों की गहनता और प्रकार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। तथापि, विश्व के दो बड़े शक्ति-गुटों के बीच, सोच व प्रायः खुले वैमनस्य का वातावरण युद्ध के बाद के दशकों की विशेषता रही। शीत युद्ध के नाम से सुपरिचित यह वातावरण विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में वास्तविक युद्धों के रूप में फैला, और उसने मानवता को खतरनाक ढंग से आवणिक हथियारों से सम्बद्ध संघर्ष के निकट ला खड़ा किया। बीसवीं सदी के अन्त की ओर, उसका शान्तिपूर्ण समापन राहत का अवसर था, जिसने एक नई वैश्विक व्यवस्था की स्थापना के सुस्पष्ट आमंत्रणों को बढ़ावा दिया। यह तीसरा क्षण था जब विश्व शान्ति पकड़ के अन्दर प्रतीत हुई। जब संयुक्त राष्ट्र के संयोजन में मानवता के भविष्य के महत्व से सम्बन्धित विषयों पर विश्व सम्मेलनों की एक श्रृंखला सम्पन्न हुई, तो अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए नई पद्धतियों को स्थान देने और वर्तमान प्रणालियों को सुदृढ़ करने के लिए पर्याप्त संवेग प्राप्त हुआ। मतैक्य के नए अवसर उभरे, और न्यायाधिकार से युक्त निश्चित अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को प्रदत्त अधिदेशों में प्रगति की संवाहक, सहयोग की भावना को अभिव्यक्ति मिली। शताब्दी के मोड पर यह सोद्देश्य विचारात्मक प्रक्रिया 'सहस्राब्दि मंच' में अपनी पराकाष्ठा पर जा पहुँची। सहस्राब्दि मंच (मिलेनियम फोरम) में एक सौ से अधिक देशों से एक हजार से ज्यादा नागरिक समाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों का मिलन हुआ था, जिसके बाद ही 'सहस्राब्दि शीर्ष सम्मेलन' (मिलेनियम समिट) सम्पन्न हुआ। यह विश्व नेताओं का अप्रतिम जमावड़ा था जिसने मानवता की एक साझा महत्वाकांक्षा दर्शाते कुछ लक्ष्यों पर सहमति का मार्ग प्रशस्त किया। 'सहस्राब्दि विकासलक्ष्यों' की विशिष्टता से युक्त, वे परवर्ती बरसों में सामूहिक क्रिया में प्राण फूंकने वाले बिन्दु बन गए। अपनी अनेक सीमाबद्धताओं, अपूर्णताओं तथा इस समयावधि में जारी रहने वाले संत्रस्तकारी संघर्षों के बावजूद, ये विभिन्न उन्नति के कदम धरती के राष्ट्रों तथा सार्वभौम न्याय, भाई-चारा, सहयोग, करुणा और समानता के प्रति उनके आकर्षण की प्रतीक वैश्विक चेतना के व्यापक, क्रमिक किन्तु अटल अभ्युत्थान के चिह्नों के रूप में स्थित हैं।

वर्तमान सदी के प्रारम्भ के साथ ही, नई चुनौतियों का संकट मंडराने लगा। समय के साथ ये तीव्रतर हुईं और उन आशाजनक अग्रगामी चरणों से पीछे की ओर ले गईं जिनके साथ विगत सदी का अन्त हुआ था। आज सर्वत्र समाजों में अनेक प्रबल बहाव लोगों को एक साथ नहीं ला रहे हैं, उनको अलग धकेल रहे हैं। निःसंदेह रूप से चरम सीमा की वैश्विक निर्धनता में कमी हुई है, किन्तु राजनैतिक एवं आर्थिक तंत्रों ने बेहद सम्पदा से युक्त छोटे-छोटे गुटों की समृद्धि को समर्थ बना दिया है। यह स्थिति ऐसी है जो विश्व-मामलों में मूलभूत अस्थिरता को भड़काती है। वैयक्तिक नागरिकों, शासन संस्थाओं और समग्र रूप में समाज की पारस्परिक क्रियायें प्रायः व्याकुल करने वाली होती हैं, क्योंकि किसी न किसी प्रदर्शन के लिए, वाद-विवाद करते लोग, अपनी सोच में अधिकाधिक हठ ही प्रदर्शित करते हैं। धार्मिक रूढ़िवादिता समुदायों के ही नहीं, राष्ट्रों के चरित्र पर भी आच्छादित हो रही है। समाज के बहुतेरे संगठनों एवं संस्थाओं की असफलताओं ने, स्वाभाविक रूप से, ही लोक-विश्वास को घटा दिया है, बल्कि सभी ज्ञान-स्रोतों की विश्वसनीयता नष्ट करने के प्रयास में निहित स्वार्थों ने इस विश्वास का सुनियोजित रूप से शोषण किया है। कुछ साझा नीतिपरक सिद्धांत जो इस सदी के आरम्भ में प्रभावी प्रतीत हुए थे, वे नष्ट हो गये हैं, और सही तथा गलत के बारे में व्याप्त उस मतैक्य को धमका रहे हैं जो विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में मानवजाति की निम्नतम प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने में सफल हुआ था। और अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिक कार्य में संलग्न होने की जिस इच्छा शक्ति ने बीस बरस पहले विश्व नेताओं के बीच विचारशीलता की प्रभावशाली प्रवृत्ति दर्शायी थी वह अब जातिवाद, राष्ट्रीयतावाद और गुटवादिता की पुनरुत्थित ताकतों के आक्रमण से भयग्रस्त खड़ी है।

बिखराव की ताकतें इसी तरह फिर समूहबद्ध होकर एक जमीन तलाश लेती हैं। यदि ऐसा होता है तो हो। मानवमात्र का एकीकरण किसी मानवी शक्ति से रुकने वाला नहीं है; प्राचीन ईशदूतों तथा 'स्वयं प्रभुधर्म के प्रवर्तक' द्वारा प्रदत्त वचन इस सत्य को प्रमाणित करते हैं। फिर भी, अपनी नियति को उपलब्ध करने हेतु मानवता जिस मार्ग को ग्रहण करती है वह बहुत अधिक कुटिल हो सकता है। धरती के संघर्षरत राष्ट्रों द्वारा मचायी गई खलबली हर समाज की श्रेष्ठ मानसिकता वाली उन आत्माओं की आवाज को दबा देने का भय उत्पन्न कर रही है, जो द्वन्द्व तथा संघर्ष का अन्त करने की मांग कर रही हैं। जब तक यह पुकार अनसुनी रहेगी, तब तक यह संदेह करने का कोई अन्य कारण नहीं है कि विश्व की अव्यवस्था तथा संभ्रम भरी वर्तमान दशा और ज्यादा बुरी होती जाएगी-सम्भवतः अनर्थकारी निष्कर्षों के साथ-और यह तब तक, जब तक शुद्ध-संयत मानवता एक और महत्वपूर्ण कदम-स्थायी शान्ति के लिए इस बार शायद एक निर्णायक कदम-उठाना उपयुक्त नहीं समझेगी।

*

विश्व शान्ति ऐसा लक्ष्य है जिसकी ओर मानवता युगों-युगों से 'ईश-शब्द' के प्रभाव से बढ़ाती रही है, जिसे प्रगतिशील क्रम से सृष्टा द्वारा अपनी सृष्टि को प्रदान किया गया है। शोगी एफेन्दी ने मानवता के अपने सामूहिक जीवन के एक नए, विश्वव्यापी चरण की ओर अग्रसर होने का वर्णन सामाजिक विकास क्रम की शब्दावली में किया है "एक ऐसा विकासक्रम जिसकी प्रारम्भिकतम शुरूआत पारिवारिक जीवन के जन्म में है, जिसका परवर्ती विकास कबीलाई एकात्मकता की उपलब्धि में, क्रमशः नगर-राज्य की संरचना की तैयारी में, और तत्पश्चात् स्वाधीन एवं प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की संस्था में विस्तृत होता गया।" अब, बहाउल्लाह के आगमन के साथ, मानवजाति अपनी परिपक्वता की देहरी पर खड़ी है। अन्ततः विश्व एकता सम्भव है। एक वैश्विक व्यवस्था ही जो मानवता की सहमति से राष्ट्रों को एक सूत्रबद्ध करती है, संसार को भयभीत करती विध्वंसकारी ताकतों के लिए एकमात्र उपयुक्त उत्तर है।

विश्व एकता यद्यपि सम्भव है-सम्भव ही नहीं, अटल है-किन्तु वह अन्ततः मानवजाति के एकत्व की स्पष्टभाषी स्वीकृति के बिना उपलब्ध नहीं हो सकती, जिसे प्रिय धर्मसंरक्षक ने इस प्रकार वह "धुरी" "जिसके चारों ओर बहाउल्लाह की सभी शिक्षाएँ परिभ्रमण करती हैं।" कैसी अन्तर्दृष्टि और वाग्मिता के साथ इस आधारभूत सिद्धांत के दूरगामी निहितार्थों को उन्होंने स्पष्ट किया! विश्व कार्यकलापों की अशांति के बीच साफतौर से उन्होंने देखा कि कैसे इस यथार्थ में कि मानवजाति एक ही जाति है, एक नई व्यवस्था का प्रारम्भिक बिन्दु होना आवश्यक है। राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों की व्यापक व्यवस्था-और उनके भीतर-सभी को इसी प्रकाश में पुनः परिकल्पित करने की आवश्यकता है।

ऐसी संकल्पना को साकार करने के लिए, देर-सबेर विश्व, नेताओं से कुशलता का एक ऐतिहासिक कार्य अपेक्षित होगा। अफसोस, कि आज भी इस साहसिक कार्य के लिए प्रयास करने की इच्छाशक्ति का अभाव है। मानवता पहचान के संकट की गिरफ्त में है, क्योंकि विभिन्न राष्ट्र तथा समूह अपने आप को, विश्व में अपने स्थान को, और उन्हें कैसा आचरण करना चाहिए उसको परिभाषित करने का संघर्ष कर रहे हैं। साझा पहचान तथा सामान्य उद्देश्य की परिकल्पना के अभाव में, वे विचारधाराओं की स्पर्धा और शक्ति संघर्ष में कूद पड़ते हैं। कदाचित 'हम' और 'वे' के अगणित क्रम विभाजन, समूहों की पहचान को और अधिक संकीर्ण रूप में, और एक-दूसरे के विरोध में, परिभाषित करते हैं। कालक्रम से, समूहों की भिन्न-भिन्न हितों में इस विच्छिन्नता ने समाज की एकजुटता को ही निर्बल कर डाला है। किन्हीं जनविशेष की प्रधानता से सम्बन्धित प्रतिस्पर्धी अवधारणाओं ने, इस सत्य के बहिष्करण में समय गँवाया

है, कि मानवता एक सामान्य यात्रा पर है जिसमें सभी नायक हैं। विचार कीजिये कि मानव अभिज्ञान की ऐसी विखण्डित परिकल्पना, उस परिकल्पना से मूलतः कितनी भिन्न है, जो मानवता की एकता का अनुगमन है। इस परिप्रेक्ष्य में, मानव परिवार को लक्षित करती विविधता, उसके एकत्व की विरोधी होने के बजाय उसे समृद्ध करती है। अपनी 'बहाई अभिव्यक्ति में, एकता, समरूपता से अंतर करते हुए, विविधता की मूलभूत अवधारणा को समाविष्ट करती है। सर्व जनों के प्रति प्रेम और मानवजाति के सर्वोत्तम हितों के लिए, कम महत्व की निष्ठाओं को गौण मानकर ही, विश्व एकता को चरितार्थ किया जा सकता है, और तभी मानव विविधता की अनन्त अभिव्यक्तियाँ अपना सर्वोच्च सम्पादन प्राप्त कर सकती है।

विषम तत्वों में सामंजस्य स्थापित करके और हर हृदय में मानवजाति के प्रति निस्वार्थ प्रेम विकसित करके एकता को संपोषित करना ही धर्म का कार्य है। साहचर्य और सामंजस्य को पोषित करने की बहुत उपयुक्त सम्भावनाओं के द्वार धार्मिक नेताओं के लिए खुले हैं, लेकिन यही नेता अपने प्रभाव का प्रयोग करके धर्मोन्माद तथा पूर्वाग्रह की आग भड़काने के लिए हिंसा का उत्तेजन भी कर सकते हैं। धर्म के सम्बन्ध में बहाउल्लाह के शब्द सुस्पष्ट हैं: 'वह' चेतावनी देते हैं, "उसे कलह और संघर्ष का कारण मत बनाओ।" "जो धरती पर निवास करते हैं उन सभी के लिए" शान्ति "ईश्वर के सिद्धांतों तथा अधिनियमों" में से एक है।

विभेद के कारण कितने ही लोग जिन कष्टों को सहन कर रहे हैं उनको सामने रखा जाए, तो जिस हृदय ने सम्पूर्ण मानवजाति के प्रति प्रेम को अंगीकार किया है वह निश्चय ही व्यथित होगा। लेकिन ईश्वर के मित्र समाज की बढ़ती इस उथल-पुथल से अपने को पृथक नहीं कर सकते, जो उनको घेरे खड़ी है, उसके संघर्षों में उलझ जाने से, या उसकी विरोधात्मक रीतियों में जा पड़ने से भी उनको अपनी रक्षा करनी ही होगी। कितनी ही कठोर दशाएँ किसी निश्चित समय पर उत्पन्न हो जाएँ, कितनी ही निराशाजनक तात्कालिक सम्भावनाएँ एकता के मार्ग में आ उपस्थित हों, हताशा की कोई बात नहीं है। संसार की दुखद स्थिति रचनात्मक कार्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दूना करने के लिए केवल हमारा गतिवर्द्धन ही कर सकती है। "ये समृद्धि और सफलता के दिन नहीं हैं", बहाउल्लाह सचेत करते हैं। "समस्त मानवजाति अनेक प्रकार की बुराइयों की जकड़न में है। अतः स्वास्थ्यप्रद औषधि के द्वारा, जिसे उस अचूक 'चिकित्सक' के सर्वसमर्थ हाथ ने तैयार किया है, उसके जीवन को बचाने का प्रयत्न करो।"

*

शान्ति की स्थापना एक कर्तव्य है जिसके लिए समस्त मानवजाति का आह्‌वान किया जाता है। इस प्रक्रिया में सहायता देने के लिए बहाई जिस दायित्व का वहन करेंगे, वह क्रमशः कालक्रम से विकसित होगी, लेकिन वे मात्र मूकदर्शक कदापि नहीं रहे हैं। अपने हिस्से की सहायता वे एकता की ओर मानवता को ले जाती ताकतों के कार्य में देते रहे हैं। संसार के लिए 'खमीर' जैसा बनने के निमित्त उनका आह्‌वान किया गया है। बहाउल्लाह के शब्दों पर विचार कीजिए:

"मानव सन्तानों की प्रशान्ति एवं कल्याण के उन्नयन के लिए स्वयं को संलग्न करो। धरती के बान्धवों एवं जनसमुदायों की शिक्षा की ओर अपनी इच्छाएँ और मन मोड़ो ताकि संयोग से, 'परम महान नाम' की शक्ति से, विभाजनकारी मतभेदों का कलंक उसके चेहरे से पोंछा जा सके, और सम्पूर्ण मानवजाति एक 'व्यवस्था' की समर्थक, और एक 'नगर' की वासी बन जाए।"

विश्व शान्ति की स्थापना के लिए जिस योगदान को करने की अपील बहाईयों से की जाती है उसके महत्व पर अब्दुल-बहा ने भी बल दिया है:

"पहले व्यक्तियों के बीच शान्ति स्थापित होना आवश्यक है, जब तक कि यह प्रक्रिया अन्त में राष्ट्रों के बीच शान्ति की ओर न ले जाए। अतएव, ऐ बहाई जनो, अपना सारा बल लगाकर तुम सभी, ईश-शब्द की शक्ति के जरिए, व्यक्तियों के मध्य यथार्थ प्रेम, आध्यात्मिक घनिष्ठता और स्थायी बन्धनों को सृजित करने का श्रम करो। यही तुम्हारा काम है।"

1985 में विश्व के राष्ट्रों को सम्बोधित अपने "विश्व शान्ति का वचन" शीर्षक संदेश में हमने विश्व की दशा और सार्वभौम शान्ति की पूर्वापेक्षाओं पर बहाई दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था। यह संदेश वैश्विक बहाई समुदाय को अध्ययन के एक आदर्श के रूप में भी सामने रखता है, जो मानवजाति के एकीकरण की सम्भावना की आशा को सम्बलित कर सकता है। तब से बाद के बरसों में, बहाउल्लाह के अनुयायियों ने धैर्यपूर्वक उस आदर्श को परिष्कृत करने का काम किया है, वे 'उनकी' शिक्षाओं पर आधारित सामाजिक संगठन का एक तंत्र बनाने और उसे विस्तार देने का काम अपने आस-पास के लोगों के साथ मिलकर करते रहे हैं। वे सीख रहे हैं कि किस तरह समुदायों को परिपोषित किया जाए जो शान्ति की उन पूर्वापेक्षाओं को मूर्त रूप दे सकें, जिनकी पहचान हमने 1985 में की थी। वे उन परिवेशों का निर्माण कर रहे हैं जिनमें जातीय, राष्ट्रीय या धार्मिक पूर्वाग्रह के किसी भी स्वरूप से मुक्त, बच्चों का पालन-पोषण किया जा सके। समुदाय के कार्यकलापों में वे पुरुषों के संग स्त्रियों की पूरी समानता का समर्थन करते हैं। अपने प्रभावों में रूपान्तरकारी और जीवन के भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों

पक्षों को सम्मिलित करते उनके शैक्षिक कार्यक्रम, प्रत्येक उस व्यक्ति का स्वागत करते हैं जो समुदाय की समृद्धि में योगदान करना चाहता है। मानवता को आक्रान्त करती तमाम बुराइयों का उपचार करने और एक नई दुनिया के निर्माणार्थ एक समर्थ नायक बनने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को सशक्त करने की उनकी इच्छा सामाजिक क्रिया की हलचलों में देखी जा सकती है। मशरिकुल-अजकार की अवधारणा से प्रेरणा ग्रहण कर, अपनी भक्तिपरक सभाओं में वे सभी धर्मों के अनुयायियों को निरपवाद रूप से आमंत्रित करते हैं। शान्ति एवं न्याय आधारित समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रतिष्ठित, युवजन, समान विचारधारा वाले अपने समकक्ष व्यक्तियों को, इसी नींवाधार पर समुदाय-निर्माण के काम मं लगा रहे हैं। स्थानीय आध्यात्मिक सभा की संस्था में सेवाभाव से शासन करने, विवादों का निराकरण करने, और एकता निर्मित करने का आध्यात्मिक प्राधिकार तथा प्रशासनिक क्षमता होती है। सभाओं के गठन की चुनावी प्रक्रिया अपने आप में शान्ति की एक अभिव्यक्ति है, यह वृहत् समाज में होने वाले चुनावों में प्रायः प्रचलित कटु आलोचना तथा हिंसा के विपरीत है। एक उन्मुक्त, और विस्तारोन्मुख समुदाय के इन सभी आयामों में यह बुनियादी मान्यता अन्तर्निहित है कि, सम्पूर्ण मानवता एक ही सृष्टा की संतानें हैं।

मित्रगण, धर्मपंथ, संस्कृति, वर्ग या जातीयता पर ध्यान दिए बिना, अपने निकटवर्ती जनों को ऐसे वार्तालापों में आकर्षित करने की क्षमता भी विकसित कर रहे हैं जिनमें बताया जाता है कि दैवी शिक्षाओं के प्रणालीबद्ध प्रयोग से किस प्रकार आध्यात्मिक तथा भौतिक समृद्धि लाई जा सकती है। इस बढ़ती क्षमता का एक संतोषप्रद परिणाम यह है कि समाज में प्रचलित विभिन्न महत्वपूर्ण संवादों में सार्थक योगदान देने की समुदाय की योग्यता में वृद्धि हुई है। कुछ देशों में, अपने समाजों के सामने खड़ी चुनौतियों का निराकरण करने के लिए प्रयासरत नेतागण तथा विचारक बहाईयों द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण के प्रति बढ़ती हुई प्रशंसा प्रदर्शित कर रहे हैं। ये योगदान 'बहाउल्लाह के प्रकटीकरण' से प्राप्त अन्तर्दृष्टियों को स्पष्ट स्वर प्रदान करते हैं, विश्व भर के अनुयायियों द्वारा अर्जित किए जा रहे अनुभव को व्यवहार में उतारते हैं, और परिचर्चा को उस उग्रता एवं विवाद से ऊपर उठाने की चेष्टा करते हैं जो समाज के परिसंवादों को प्रायः आगे बढ़ने से रोकते हैं। इसके अतिरिक्त बहाईयों द्वारा प्रस्तुत किए गये विचार तथा विवेचना की रूपरेखा उनके परामर्श के आचरण से सम्बलित होते हैं। बहाउल्लाह के अनुयायी सामंजस्य के महत्व और विरोध की निष्फलता को भलीभांति समझते हैं, अतः वे ऐसी दशाएँ उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं जो किसी भी वातावरण में एकता के आविर्भाव की परम संवाहक हैं। यह देखकर हमारे हृदय प्रशंसित हैं कि बहाई जन समाज के परिसंवादों में भाग लेने के अपने प्रयासों का विस्तार कर रहे हैं-खासतौर से वे मित्र जो,

अपनी व्यावसायिक क्षमता में, प्रत्यक्षतः शान्ति से सम्बन्धित उद्बोधनों में योगदान कर सकते हैं।

*

बहाईयों के लिए, शान्ति की सिद्धि मात्र ऐसी आकाँक्षा नहीं है जिसके प्रति वे सहानुभूतिपूर्ण हैं, या एक ऐसा लक्ष्य नहीं है जो उनके अन्य उद्देश्यों का संपूरक हो - वह सदैव एक प्रमुख महत्व का विषय रहा है। हेग की 'स्थायी शान्ति के लिए केन्द्रीय संस्था' को सम्बोधित दूसरी पाती में अब्दुल-बहा ने सबल शब्दों में कहा कि "शान्ति की हमारी कामना मात्र बुद्धि की उपज नहीं है: यह धार्मिक विश्वास का विषय है, और प्रभुधर्म के शाश्वत नींवाधारों में एक है।" उन्होंने देखा था कि विश्व में शान्ति के क्रियान्वयन के लिए, यह पर्याप्त नहीं है कि लोगों को युद्ध की विभीषिकाओं की जानकारी दी जानी चाहिएः

"विश्व शान्ति के लाभों को आज लोगों के बीच मान्यता मिल रही है, और इसी प्रकार युद्ध के हानिकर प्रभाव सभी के सामने स्पष्ट तथा प्रत्यक्ष हैं। लेकिन इस विषय में, केवल ज्ञान ही बिल्कुल पर्याप्त नहीं है। सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना के लिए क्रियान्वयन की एक शक्ति की आवश्यकता है।" "यह हमारा दृढ़ विश्वास है", वह आगे कहते हैं, "कि इस महान प्रयत्न में क्रियान्वयन की शक्ति ईश-शब्द का मर्मवेधी प्रभाव और 'पावन चेतना' की सम्पुष्टियाँ हैं।"

तब निश्चय ही, विश्व की दशा से जो लोग अभिज्ञ हैं वे इस प्रयत्न के लिए अपना सब कुछ अर्पित करते हुए, उन सम्पुष्टियों को प्राप्त करने की चेष्टा किए बिना नहीं रह सकते: हम भी इन सम्पुष्टियों के लिए आप की ओर से 'पावन देहरी' पर दृढ़ता से विनती कर रहे हैं। परमप्रिय मित्रों: आप और आप के समान विचारधर्मी सहयोगी समुदायों का आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर आधारित निर्माण करने के लिए, अपने समाजों की उन्नति हेतु उन सिद्धान्तों को लागू करने के लिए और प्रादुर्भूत अन्तर्दृष्टियों की प्रस्तुति के लिए जो समर्पित प्रयास कर रहे हैं-ये सर्वाधिक सुनिश्चित विधियाँ हैं जिनसे आप विश्व शानित के वचन की पूर्ति शीघ्र कर सकते हैं।

विश्व न्याय मन्दिर